

संग्रहीत संस्कृत विद्यालय

अ.नं. e

३२<२४:३

३१८६२१



राजा १८०३

संग्रहीत

अथाष्टाद  
१०:प्रारम्भंते



"Joint Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Rashwantrao Chavan Pralshuhan Akhanda Akhara, Mumbai"

(1)

(2)

# अथाष्टादशार्थक कमणिकाप्रारंभः



(३)

|      |       |  |
|------|-------|--|
| अनु. | पत्र. | अथाष्टादशसमृत्यनुकमणिकालिख्यते.          |
| १    | ०     | अविस्मृतिः.                              |
| १    | १     | पूर्वकधाप्रस्तावः.                       |
| १    | २     | अविभाषणं.                                |
| १    | ३     | ब्राह्मणानांषद्गीर्मणि.                  |
| १    | ४     | स्वधर्मत्वाग्निनांगनयः.                  |
| १    | ५     | ब्राह्मणाचरणानि.                         |
| १    | ६     | राजामाचरणानि.                            |
| १    | ७     | ब्राह्मणानांशौचस्तानविधिः तत्त्वस्तणानि. |
| १    | ८     | अनसूयाशौचलक्षणं.                         |
| १    | ९     | मंगललक्षणं.                              |
| १    | १०    | अनायासलक्षणं.                            |
| १    | ११    | स्वृहालक्षणं.                            |

|       |       |                           |
|-------|-------|---------------------------|
| श्लो. | पत्र. | विषयः                     |
| ०     | १     | दमलक्षणं.                 |
| २     | १     | दानलक्षणं.                |
| १२    | १     | दयालक्षणं.                |
| १६    | १     | गृहस्थब्राह्मणलक्षणं.     |
| २०    | १     | इष्टापूर्वकलम्.           |
| २६    | १     | इष्टापूर्वलक्षणं.         |
| २९    | १     | इष्टापूर्वनस्त्रियनिषेधः. |
| ३४    | १     | दशनियमाः.                 |
| ३५    | २     | पिंडोदकक्रियाः.           |
| ३६    | २     | पुत्रजननप्रशंसा           |
| ३७    | २     | शंकास्थानेभाहारशुद्धिः.   |
| ३८    | २     | प्रायश्चिन्नानि           |

| श्लो. | पत्र. | विषयः                                     | क्रम. |
|-------|-------|---|-------|
| ३९    | २     | गृहशुद्धिः.                               | ७९    |
| ४०    | २     | श्वानस्पश्चियः.                           | ८०    |
| ४१    | २     | सूतकनिषयः.                                | ८४    |
| ४२    | ३     | सपिंडनिषयः.                               | ८५    |
| ४३    | ३     | शवविधिः.                                  | ८८    |
| ४५    | ३     | प्रायश्चिन्नानि                           | ९०    |
| ४६    | ४     | बालादिशाङ्कस्याग्निनांसूतकानि.            | १००   |
| ४९    | ४     | भष्टादिनांविधिः.                          | १०८   |
| ५२    | ४     | धर्माचरणंवांशायणंत्र.                     | ११०   |
| ५८    | ४     | अतिकृच्छलक्षणं                            | १११   |
| ५९    | ४     | पर्णकृच्छलक्षणं                           | ११५   |
| ७५    | ४     | पंचगव्यसांतपनः महासांन पनः प्राजापत्यः नस | १     |

(3A)

| पत्र. | विषय   | श्लो. | पत्र.   | विषय | श्लो.  | पत्र. | विषय | श्लो. |
|-------|--|-------|---|------|--|-------|------|-------|
| ४     | कुङ्कु.वैदिककुङ्कु.शादकुङ्कु.कुङ्कुनिकुङ्कु.परा- | ७     | कनुगमनं, अंत्यजसंख्या. चांडालेस्त्रीगमनप्रा-                      | २४६  | णानि, श्राद्धभोजनप्रशंसा. श्राद्धाकरणेदोषः         | ३६८   |      |       |
| ४     | क.पिण्डाक. सौम्यकुङ्कुतुलापुरुषधारेष्टाकृ-       | ८     | यश्चित्तानि. इतराणिप्रायश्चित्तानि.                               | १२   | श्राद्धप्रशंसा.                                    | ३६८   |      |       |
| ४     | छु. नक्तभोजनादिप्रायश्चित्तानि.                  | १२९   | स्मृष्टास्पृष्टविचारः शुद्धाः शुद्धविचारः, अज्ञा-                 | १२   | वैश्वदेवादिपंचयज्ञाः दशविधाविग्राः देवब्राह्म-     |       |      |       |
| ४     | अनादिष्टपातकप्रायश्चित्तानि.                     | १३२   | नात्त्राभ्युप्रायश्चित्तानि. शुद्धेदकपीतस्तात्त्वायश्चित्तं, आहि- |      | णशब्दार्थः विप्रमुनिलक्षणं, विप्रद्विज, विप्रस्ता- |       |      |       |
| ५     | स्त्रीशूद्धपतननानि.                              | १३८   | ताम्ने: प्रायश्चित्तगृहस्थाननिषेधः प्रायश्चिना-                   |      | भिय, विप्रवेश्य, विप्रभूद्ध, विप्रनिषाद, विप्रप-   |       |      |       |
| ५     | ब्राह्मण, विप्र, वेदविन्, द्विजोत्तमलक्षणानि.    | १४०   | नि, रजभलास्पर्शनप्रायश्चित्तानि.                                  | २४२  | शु, विप्रमूँछ, विप्रचांडाल, भ्रष्टभागवतलक्ष-       |       |      |       |
| ५     | ब्राह्मणजन्मसार्थकं.                             | १४३   | भोजनेस्पर्शदपाः इतराणायश्चित्तानि. गृहल-                          |      | णानिश्राद्धमहादानेनिषिद्धाः ब्राह्मणाः पूजने-      |       |      |       |
| ५     | भोजननियमाः                                       | १४७   | क्षणं   | ३१०  | निषिद्धाः ब्राह्मणाः कीतस्त्रीनिषेधः इतराः         |       |      |       |
| ५     | वेद, गुरु, दान, महत्वं पात्रापात्रविचारः भोज-    | १५१   | यवनधर्मलक्षणं, इत्तरभाषायश्चित्तानि. मुखधा-                       |      | नियमाः, यंथोपसंहारः                                | ३१८   |      |       |
|       | नपात्रविचारः, वज्र, प्रायश्चित्तं.               | १५१   | वन, मृद्गक्षण निषेधः इतराः नियमाः                                 | ३२२  | इतिश्री अविस्मृत्यनुकमणिकासंपूर्णा.                | १     |      |       |
| ६     | भिष्मुकसंख्या. स्त्रीसंभोगनियमः पंचपातका-        | ११    | दानप्रशंसा  | ३४१  | अथविष्णुस्मृत्यनुकमणिका.                           |       |      |       |
|       | नि. तन्त्रद्विकराणिप्रायश्चित्तानि.              | ११४   | श्राद्धकर्मणिब्राह्मणलक्षणानि, ब्राह्मणलक्ष-                      | १२   | पूर्वकस्याप्रस्तावः विष्णुभाषणं                    | ८     |      |       |

(१)

अनु-

२

पत्र-

१३

विषयः  
ब्राह्मणत्वसंस्कारे गर्भादो प्रतिगर्भेसीमंतोन्न  
यन्जातकर्म, बहिर्निक्रमणं.  
अन्नप्राशनं केशकर्म.  
ब्राह्मणस्य अभिष्ठमे उपनयनं  
द्विजत्वसिद्धौ सावित्र्याधिकारः  
क्षत्रियवैश्ययोरेकादशे वर्षेऽउपनयनं.  
शूद्रसंस्कारः  
चतुर्णविर्णनां दादि  
प्रातः कृत्यादिभन्हिकं अध्ययनविचाहादि  
१४ गृहीधर्माः  
१५ गृहस्थ्यब्रह्मचारिणोः वनवासधर्माः  
१५ ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थेशुभिर्नेनपरिगृ-

विषयः

श्लो-

पत्र-

९

हीनपारिव्राजकत्वधर्माः

११

राजधर्माः वैश्यधर्माः ब्राह्मणधर्माः शूद्रधर्माः  
विष्णुस्मृतिः सपुणा च चोद्यायः ५

१२

हारीतमृत्युनुकम्पिकारंभः  
हारीतकशाषणेऽप्रसदनानां

१३

तस्माच्चातुविष्णुतुवाऽप्यमाः प्र० ध्या०

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

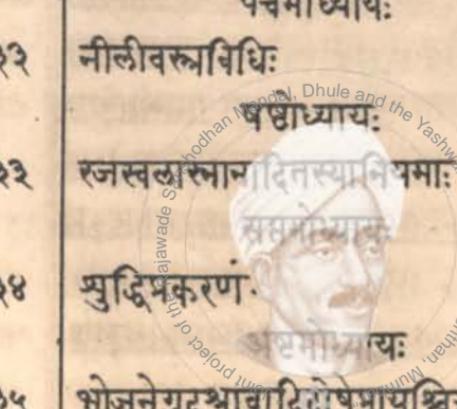
३८

३९

३०

(3A)

| पत्र. | विषय.  | श्लो. | पत्र. | विषय.  | श्लो. | पत्र. | विषय.  | श्लो. |
|-------|--|-------|-------|--|-------|-------|--|-------|
|       | अथापस्तंबस्मृत्यारंभः  |       | २३    | चांडालस्पर्शदोषादोप्रायश्चित्तानि-   | १-१५  |       | अथसंवर्तस्मृत्यनुकमणिकारंभः  |       |
| ३०    | सर्वऋषीणांआपस्तंबमुनेःप्रभः  | १-८   |       | पञ्चमोध्यायः   | ३७    |       | संवर्तमुनिंप्रनिवासदेयादिक्षीणांप्रभः  | १-३   |
| ३१    | मनुष्यबालानांगवानांचपालननियमाः<br>प्रथमोध्यायः                             | ८-३०  | ३२    | नीलीवर्णविधिः<br>षष्ठाध्यायः   | १-९   | ३७    | ब्रह्मणनिवासेयोग्योदेशः संध्याप्रकरणंतथा-<br>चसर्वाचारमकरणंमृताशौचंदानप्रशंसाक                         |       |
| ३१    | सामान्याः शास्त्रार्थाः<br>द्वितीयोध्यायः                                  | १-१४  | ३३    | रजस्वलुरुमानादितस्यानियमाः<br>सत्त्वमप्यग्नः                                   | १-२१  |       | तुदर्शनात्पूर्वकन्यादानेनियमाः कन्यादानो-<br>त्तरंइतरदानानिरोगिभ्योअौषधादिदानफलं                       | १-१०० |
| ३२    | अज्ञानादत्यजोगेहेनिवासिनस्तस्यदोषादि-<br>शास्त्रार्थाः<br>तृतीयोध्यायः     | १-१२  | ३४    | शुद्धिप्रकरणं<br>त्रितीयोध्यायः  | १-२१  |       | ब्रह्मचारीयतीनांवपनंकारयितुः फलानि-<br>देवागारेहिजातयेदीपदानप्रशंसा·अपवा-<br>दोषाः चतुर्कालगमनं        |       |
| ३२    | चांडालकूपभांडादिषुअसानाज्जलपानादि-<br>दोषेप्रायश्चित्तानि<br>चतुर्थोध्यायः | १-१२  | ३५    | भोजनेयुद्भावादिदोषेप्रायश्चित्तानि-<br>नवमोध्यायः                              | १-४५  | ३८    | वानप्रस्थाश्रमः चतुर्थाश्रमः प्रायश्चित्तविधिः<br>सुरापानेप्रायश्चित्तं स्वर्णस्तेयिनःप्रा·गुरुतत्त्वं |       |
|       |  | १-१२  | ३६    | सामान्यानिप्रायश्चित्तानिमोक्षोपायाः<br>दशमोध्यायः समाप्ताचेयमापस्तंबस्मृतिः ७ | १-१७  | ४०    | गप्राय·संपर्कप्रायश्चित्तं चातुर्वर्ष्यहननेप्राय-  |       |



(५)

अनु  
३

पत्रः विषयः  
 ४४ श्वितानि. गोद्ध्रप्रायश्चिन्तं. सामान्यानिप्राय  
 श्वितानिगायत्रीमाहात्म्यं  
 समाप्ताचेयं संवर्तस्मृतिः ८  
 अथकात्यायनस्मृत्यारंभः -  
 ४४ यज्ञोपवीतनिर्माणनादिभान्तकापूजनेविशे  
 षः (प्रथमस्वंडः)  
 ४५ ब्राह्मणामंत्रणादिर्भलक्षणविधिकर्मवि  
 घातेप्रायश्चिन्तं  
 द्वितीयस्वंडः  
 ४५ अक्रियास्वरूपं मधुशब्दार्थः सुसंपन्नं एत  
 च्छब्दानंतरमन्ननिवेदन अवनेजनानकर्म १-१४  
 तृतीयस्वंडः -

श्लो. पत्रः  
 १०० ४६  
 २२२

विषयः  
 दृद्धिश्वाङ्केनश्चात्यभेदः इनरश्वाङ्केयवादि  
 रहितोऽप्यएवविधिच्चमिष्टोऽन्तोश्वाङ्कविधिः  
 चतुर्थस्वंडः  
 दृद्धिश्वाङ्कमातृपूजनं अस्त्रकुलमिणिप्रति  
 योगंकर्तव्यमिक्तानिकर्मणे- सामान्यतो  
 यत्रयत्तदृद्धिश्वाङ्कमातृपूजनं प्रासांगि १-११  
 कमिति  
 पंचमः स्वंडः  
 अग्न्याधानप्रकरणं ८षष्ठः स्वंडः १-१५  
 अरणिकरणोदक्षाः मंथनयंत्रं मंथनादग्न्युस  
 तिः मंथनेस्त्रीघ्रहणं स्तुकस्तुवकरणं समिलु  
 क्षणं इधमलक्षणं ८सप्तमः स्वंडः १-२४

श्लो. पत्रः  
 १-१२ ४८  
 ४९

विषयः  
 अष्टमः स्वंडः  
 सायंप्रातरोपासनहोमेकालः परिसमूहनप  
 युक्षणनियमाः मंदानौहवननिषेधः १-१५  
 नवमः स्वंडः  
 दंतधावनेस्तानेनियमाः समुद्रवाहिनीषुनदी १-२०  
 युश्चावणादिमासद्येस्ताननिषेधः रनस्तल  
 सुनदीषुनेमित्तिकानिस्तानानि- दशमः स्वंडः  
 प्रथमः परिपाठः  
 संध्योपासनविधिः १-१७  
 एकादशः स्वंडः  
 देवर्षिपितृतर्पणं - गर्धं १-६  
 द्वादशः स्वंडः

श्लो. क्रमः  
 १-१६  
 १-२०  
 १-१७  
 १-६  
 ३

(५८)

| पत्रः | विषयः   | श्लोः | पत्रः | विषयः  | श्लोः | पत्रः                             | विषयः  | श्लोः |
|-------|---|-------|-------|--|-------|-----------------------------------|--|-------|
| ५०    | पंचमहायज्ञाः वैश्वदेवः वलिदानन्तः<br>भ्रयोदशः रवंडः   | १-१४  | ५३    | पितृयज्ञे शंकुकरणं अन्वष्टक श्राद्धं<br>सप्तदशः रवंडः                      | १-२६  | ५४                                | हादिविधिः<br>एकविंशतिनमः रवंडः   | १-१६  |
| ५१    | बलिहरणविन्यासः ब्रह्मयज्ञप्रशंसा, तर्पणे<br>विशेषाः<br>चतुर्दशः रवंडः   | १-१४  | ५३    | सायमादिभानरंतमे कंकर्म, श्रौतस्मार्तक<br>र्मणिपत्यधिकारं आहितान्नः पलीलक्ष | १-२४  | ५६                                | आहितान्ने दर्दा होत्तरकियाः<br>द्वाविंशतिनमः रवंडः   | १-१०  |
| ५२    | दक्षिणादिदानविधिः आन्यस्थालीनियमाः,<br>चक्रस्थालीनियमाः इधमेक्षणेनियमाः, मु<br>सलोलूरवलनियमाः, शूर्पनियमः परिधिनि १-२१<br>यमाः पंचदशः रवंडः<br>पिंडान्वाहार्यक श्राद्धं जीवतिप्रपितामहेपि<br>तुः पिंडदानादि.<br>षोडशः रवंडः | १-२३  | ५४    | प्रानिन स्वामरणो दाहादिविधिः<br>अद्यादृशम् रवंडः<br>एकानविधिः रवंडः        | १-१६  | ५७                                | आहितान्ने दर्दा होत्तरकियाः<br>द्वाविंशतिनमः रवंडः<br>आहितान्ने दर्दा होत्तरकियाः<br>द्वाविंशतिनमः रवंडः<br>आहितान्ने दर्दा होत्तरकियाः<br>द्वाविंशतिनमः रवंडः | १-१४  |
| ५३    | पतिपलीमूलं नवनिषेदं दिभ्यो हवननिषेदः, आहितान्ने दर्दा होत्तरकियाः<br>करणोदोषः आहितान्नः पलीमरणेविधिः<br>विंशतिः रवंडः   | १-१९  | ५५    | आहितान्नि दुर्बलश्वेषो मविधिः तन्मरणेदा                                    | ५८    | नवयज्ञविधिः<br>पंचविंशतिनमः रवंडः | १-१८   |       |

(6)

अनु-

४

पत्र-

विषय-

समशनीयश्चरः, गोयजः, दृषभोलगः, अश्व  
यजः, तेषांकालः, अष्टकाश्चाद्यप्रशंसा  
पद्मिंशनितमः, खंडः

५८

कायदोश्चाद्यकम्निदक्षिणात्सकमन्वाहा  
र्यं चातुर्वर्ष्यस्यदंडः  
सप्तविंशनितमः, खंडः

५९

श्रीनकर्मणिसामान्याः, शास्त्रार्थाः  
अष्टाविंशनितमः, खंडः

६०

पशोरंगथहणविशेषाः, नथाशास्त्रार्थाः

एकोनविंशनितमः, खंडः

इतिकात्पायनस्मृत्यनुकमणिकासमाप्ता:

अथवहस्पनिस्मृत्यनुकमणिकारंभः

श्लो-

१-१७

६१

१-२१

६१

१-१९

६२

१-१९

६२

१-१९

६२

१

६२

पत्र-

६१

६१

६१

६१

६१

६२

६२

६२

६२

६२

६२

६२

विषय-

वाचस्पतिं प्रनिइद्धप्रभः

दानप्रशंसा भूमिदानं

गया शाद्य महिमा

नीलद्युलस्पृष्टानन्व

शूमिर्तुर्दोषः

कांचन भूमिगोदानान्

भूमिहर्तुर्दोषः

सपिंडीकरणे निष्ठानिस्थलानि

ब्रह्मस्वकरणे दोषाः

ग्राहणक्रोधग्रहणे दोषः

सत्पानेदानं

तडगकरणपुराणश्रवणं

विषय-

निदाघेउदकदानं

दीपान्बदानं

गोभूमिदारहरणे दोषाः

विवाहयजदाने धुविघकर्तुर्दोषाः

सत्कर्मकर्तुः फलानि

इतिवहस्पनिस्मृतिः समाप्ता १०

अथपाराशरस्मृत्यनुकमणिकारंभः

पूर्वकथाप्रस्तावः

व्यासप्रभः

चतुर्युग्धर्माः

दिनषट्कर्मणि

अनिधीपूजनं

श्लो-

६५

६७

६९

७०

८०

११०

१११

१११

३७

३९

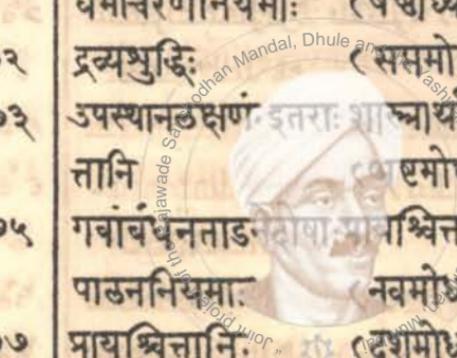
४९

क्रम-

८

(6A)

| पत्र. | विषय.   | श्लो. | पत्र. | विषय.  | श्लो. | पत्र.  | विषय.                                       | श्लो. |
|-------|---|-------|-------|--|-------|--|---|-------|
| ६५    | यनिव्रह्नचारिणांभिक्षादानं                      | ४९-५४ | ०     | पंचमोध्यायः ५                                  | ०     | ०  | समाप्ताचेयंपाराशरस्मृतिः                    | ०     |
| ६६    | वैश्वदेवाऽकरणेदोषः                              | ५८    | ७०    | प्राणिहत्यानिष्टुनिः इतराणि प्रायश्चित्तानि।   | १-७५  | ०  | अथवासस्मृत्युक्तमणिकारंभः                   | ०     |
| ६७    | प्राप्ततश्चिरदक्षिणामुखभोजनेदोषः                | ५९    |       | धर्मचरणनियमाः (पञ्चोध्यायः)                    | ८३    | पूर्वकथाप्रस्तावः वर्णधर्मोत्त्यन्तिः शोडशसंस्का | १-४२  |       |
| ६८    | यतयेव्रह्नचारिणेनादेयपदार्थः                    | ६०    | ७२    | द्रव्यशुद्धिः (सप्तमोध्यायः)                   | १-४३  |  | राः ब्रह्मचर्यतन्त्रियमाश्वः (प्रथमोध्यायः) |       |
| ६९    | अनिधिलक्षणानि-                                  | ६६    | ७३    | उपस्थानउक्तक्षणं इतराः शास्त्रार्थाः प्रायश्चि | ८४    | द्वितीयाश्रमः तन्त्रियमाश्वः                     | १-५५  |       |
| ७०    | क्षत्रियादिवर्णनव्यधर्माः (प्रथमोध्यायः)        | ७४    |       | तानि (षष्ठमोध्यायः)                            | १-५०  | ८६   | नित्यं नैमित्तिकः काम्यकर्माणि              | १-७३  |
| ७१    | गृहस्थब्राह्मणधर्माः (द्वितीयोध्यायः)           | १-२०  | ७५    | गचांचेष्टनताङ्गदाषाः प्रायश्चित्तानि-धर्म-     |       |  | तृतीयोध्यायः                                |       |
| ७२    | जननमरणाशोचे। (तृतीयोध्यायः)                     | १-५०  |       | पालननियमाः (नवमोध्यायः)                        | १-६३  | ९९   | गृहस्थाश्रमप्रशंसा                          | १-७१  |
| ७३    | स्त्रीपुरुषयोद्देषदोषः                          | १-२   | ७७    | प्रायश्चित्तानि: (दशमोध्यायः)                  | १-४३  | ०  | इतिवासस्मृत्युक्तमणिकासंपूर्ण १२ च          | ०     |
| ७४    | प्रायश्चित्तानि-                                | २-२१  | ८०    | प्रायश्चित्तानि-धर्मपालननियमाः                 | १-५७  | ०  | तुर्थोध्यायः ४                              | ०     |
| ७५    | न्यायाः इतराः नियमाः (चतुर्थोध्यायः)            | ३१३३  | ८३    | प्रायश्चित्तानि-धर्मपालननियमाः                 | १-८   | ०  | अथशंखस्मृत्युक्तमणिका प्रारंभः              | ०     |
| ७६    | अनेकानिप्रायश्चित्तानि भाहिताग्नेर्दाहितिः १-२५ | ०     |       | (एकादशोध्यायः ११)                              | ०     | ९१   | चातुर्वर्ण्यधर्माः                          | १-८   |



Oshan Mandal, Dhule and Nashik  
Digitized by srujanika@gmail.com

(7)

अनु.  
५

| पत्र. | विषय.  | श्लो. | पत्र. |
|-------|--|-------|-------|
| ०     | प्रथमोध्यायः १   | ०     | १५    |
| १२    | गर्भस्पष्टतानः मौर्जीबंधनपर्यंतसंस्काराः १-१३                  | ०     | १५    |
| ०     | द्वितीयोध्यायः २   | ०     | १५    |
| १३    | ब्रह्मनर्यधर्माः स्नानकावधि १-१५                               | १६    | १६    |
| ०     | तृतीयोध्यायः ३   | ०     | ०     |
| १२    | गृहधर्माः अष्टप्रकारकविवाहाः स्त्रीलक्षणानि. (चतुर्थोध्यायः ४) | १-१६  | १७    |
| १३    | पंचमहायज्ञाः चतुराश्रमस्थानांमुकिद्वारं १-१९                   | ०     | ०     |
| ०     | पंचमोध्यायः ५  | ०     | १८    |
| १४    | वानप्रस्थाश्रमः (षष्ठोध्यायः)                                  | १-१७  | १९    |
| १४    | चतुर्थाश्रमः व्यानादास्त्रभासिः                                | १-३३  | १४    |
| ०     | सप्तमोध्यायः   | ०     | १००   |

| पत्र. | विषय.  | श्लो. | पत्र. |
|-------|--|-------|-------|
| १५    | नित्यनैमित्तिकादिषोदास्नाननिर्तिर्थस्नानानि निर्तिर्थस्नानानि (अष्टमोध्यायः) | १-१६  | १००   |
| १६    | कियास्नानविधिः (सप्तमोध्यायः)  | १-१५  | १०१   |
| १७    | आचमनविधिः चिकालस्याविधिः   | १-२१  | १०२   |
| १८    | दशमोध्यायः १००   | ०     | १०३   |
| १९    | अपमण्णादिस्त्रिपतः (एकदशोध्यान्) १-५   | १-५   | १०४   |
| २०    | गायत्रीजपानविधिः गायत्रीजपत्रयोगाः १-१८                                      | ०     | १०५   |
| २१    | द्वादशोध्यायः १२   | ०     | १०६   |
| २२    | गायत्रीनर्पणविधिः गदानि व्रेयोदशोध्या १-५                                    | १-५   | १०७   |
| २३    | अनग्रहणेत्राल्पणादीनांविवाहः पिंडदणेनि यमाः, श्राद्धप्रशंसा (चतुर्दशोध्यायः) | १-३३  | १०८   |
| २४    | अशोचनिर्णयः (पंचदशोध्यायः)   | १-२५  | १०९   |

| पत्र. | विषय.   | श्लो. | क्रम. |
|-------|---|-------|-------|
| १००   | भांडवर्लादीनांशुद्धिः शुद्धप्रदार्थः मृतिका शुद्धि (षोडशोध्यायः)  | १-२४  |       |
| १०१   | महापातकि नांदादशवर्षीस्त्विवनवासप्राय श्रितंत्रनियमाः आचरणे अभद्र्यभक्षणे प्रायश्चित्तानि (सप्तदशोध्यायः) | १-६६  |       |
| १०२   | सामान्यानिपायश्चित्तानिरवस्थाद०ध्या०  | १-१६  |       |
| १०३   | इतिसमाप्ते यंशंरवस्मृत्यनुकमणिका १३   | ०     |       |
| १०४   | अयलिखितस्मृत्यनुकमणिकाप्रारंभः  | ०     |       |
| १०५   | इष्टापूर्तशब्दार्थः तदधिकारिणः गंगास्नानानि माहात्म्यं पुत्रप्रशंसा नीलवृष्टलक्षणं षोड                    | १-२५  |       |
| १०६   | शशाङ्कानि संकान्तोउपरागेचपिंडदानं सप्तिं दीकरणे अधिकारिणः   | ५     |       |

| पत्र. | विषय.   | श्लो. | पत्र.                                       | विषय.  | श्लो. | पत्र.  | विषय.                                  | श्लो. |
|-------|---|-------|---|--|-------|--|--|-------|
| १०५   | पिंडानेनियमः अधिकमासेशाङ्कनियमः वैश्वदेवः गृहबलिः दर्भप्रशंसा· एद्वे शाङ्कनियमाः शाङ्कविशेषेविश्वेदेवाः   | १-५०  | १०८   | अन्हिककृत्यं (द्वितीयोध्यायः)                        | १-५१  | ११६  | ब्रह्मचारिणः आश्रमविकल्प्याः (गद्यानि) | ०     |
| १०६   | कन्यादानेनियमाः शाङ्कमृत्यात्रनिषेधः विधिनायहर्णं च शाङ्केन रवन्येकमणि, शाङ्कभोजनेनियमाः शाङ्कभोजनेप्रायश्चिन्नानि· शाङ्ककरणेअनधिकारिणः, प्रायश्चिन्नानिपरिवेदनेअदोषिणः | ११०   | ११०   | गृहीणां नवकर्मणि. (तृतीयोध्यायः)                     | १-३३  |  | (तृतीयोध्यायः) ३                       |       |
|       | ११२   | १११   | पत्नीसुरव्यो गृहस्थ्यात्रमः (ततुर्थोध्यायः) | १-२०   | ११७   | पिवाहादिगृहस्थ्यधर्माः (गद्यानि) ततुर्थोध्यायः ४                               |  |       |
|       | ११२   | ११२   | शुद्धभुद्वौ विशेषः (पंचमोध्यायः)            | १-१५   |       | गर्भधानं गृह्यान्विः पंचयज्ञाः भोजनं (गद्यानि), (पंचमोध्यायः ५)                |  |       |
|       | ११३   | ११३   | जननमरणराज्ञं (षष्ठोध्यायः)                  | १-२०   | ११७   | स्त्रीगमनेनियमाः इनरनियमात्रव. (गद्यानि) (षष्ठोध्यायः)                         |  |       |
|       | ११४   | ०     | योगशास्त्रं (सप्तमोध्यायः ७)                | १-५४   |       | ब्राह्मणानां षट्कर्मणि आपद्माः संकरविषयाः (गद्यानि) (सप्तमोध्यायः ७)           |  |       |
|       | ०   | ०     | समासानेयद्वास्यम् तुकमणिका. १५              | ०  | ११८   | राज्ञो ब्राह्मणस्य बहुश्चितस्य लक्षणानिगृह्यस्थधमश्व. (गद्यानि) (अष्टमोध्यायः) |  |       |
|       | ०   | ०     | अथ गौतम कमणिकाप्रारंभः                      | ०  |       |  |  |       |
|       | ०   | ०     | मौञ्जीकमण्यधिकारिणः तत्कालप्रयोग            | ११८  |       |  |  |       |
| १०७   | प्रायश्चिन्नानि.  | ७५१२  | ११५   | श्व. (गद्यानि) (प्रथमोध्यायः १)                      |       |  |  |       |
| ०     | समासेयं लिखितस्मृतिः १४   | ०     |   |  |       |  |  |       |
| ०     | अथदक्षस्मृत्यनुकमणिकाप्रारंभः   | ०     | ११६   | मौञ्ज्याः पूर्ववटोर्नियमाः ब्रह्मचारिणः धर्माः गद्या | ११८   |  |  |       |
| १०७   | ब्रह्मचर्य. (प्रथमोध्यायः १)  | १-१५  |   | स्नातकलक्षणं) द्वितीयोध्यायः २                       | ०     |  |  |       |

(४)

अनु.  
६

पत्र. विषय.

११९ स्त्रीसंभोगेनियमाः (गद्यानि.) नवमो  
ध्यायः १) (प्रथमः प्रपाठः)

१२० चारुर्वर्णस्थधर्माः (गद्यानि.) दशमो ध्या-  
यनधर्माः (गद्यानि.) (एकादशो ध्यायः)

१२१ शूद्रधर्माः (गद्यानि.) (द्वादशो ध्यायः)

१२२ असत्यसाक्षिणः (गद्यानि.) (त्रयोदशो  
ध्यायः १३)

१२३ शावमाशोचं (गद्यानि.) (त्रितीयो ध्यायः)

१२४ अमावास्याश्राद्धः (गद्यानि.) (पंचदशो  
ध्यायः) १५

१२५ अवणाकर्मप्रोष्ठपदीविधिः (गद्यानि.)  
षोडशो ध्यायः १६

पत्र. विषय.

० १२२ ग्राहणभौजनं (गद्या-  
नि.) (सप्तदशो  
ध्यायः १७).

० १२४ स्त्रीणां स्वातन्त्र्यनियमः (गद्यानि.) अष्टा-  
दशो ध्यायः १८) (द्वितीयः प्रपाठः)

० १२४ पुरुषस्थानकान् (गद्यानि.) (एकोनविं-  
शो ध्यायः १९)

० १२५ चतुःषष्ठियान् (गद्यानि.) (विशतिनमो  
ध्यायः २०)

० १२५ प्रेतकर्मः (गद्यानि.) (एकविंशो ध्यायः २१)

० १२६ पंचमहापातकिनः (गद्यानि.) (द्वाविंशो  
ध्यायः २२)

० १२६ प्रापश्चित्तानि (गद्यानि.) त्रयोनविंशो ध्या-

पत्र. विषय.

० १२७ सुरापानां मांसाशिनां प्रायश्चित्तानि (गद्या-  
नि.) (त्रितीयो ध्यायः)

१२७ अभोन्यभोजिनां प्रायश्चित्तानि (गद्या-  
नि.) (पंचविंशो ध्यायः २५)

१२७ क्षतब्रते प्रायश्चित्तं (गद्यानि.) (षष्ठिंशो  
ध्यायः २६)

१२८ कुलप्रायश्चित्तानि (गद्यानि.) (सप्तविं-  
शो ध्यायः)

१२८ चांद्रायणप्रायश्चित्तानि (गद्यानि.) अ-  
स्ताविंशो ध्यायः २८)

१२८ पितॄर्मरणोन्नर्ददायविभागः (गद्यानि.)  
एकोनविंशो ध्यायः (तृतीयः प्रपाठः)

श्लो.

क्रम.

६

(8A)

| पत्र. | विषयः   | श्लो. | पत्र. | विषयः   | श्लो. | पत्र.  | विषयः   | श्लो.                                     |   |
|-------|---|-------|-------|---|-------|--|---|---|---|
| ०     | समाप्ताचेयं गौतमस्मृत्यनुक्रमणिका । १६<br>अथशातानपस्मृत्यनुक्रमणिकारंभः                             | ०     | ०     | अथवासिद्धस्मृत्यनुक्रमणिकाप्रारंभः  | ०     | १४२  | आनारः परमोर्धर्मः सर्वेषां । (गद्यानि.) षष्ठो | ०   |   |
| १३०   | जन्मान्तरे अकृतप्रायश्चित्तानां जन्मतूनां लक्षणानि महापापिनां लघुपापिनां चरोगाः ।<br>(प्रथमोध्यायः) | १-३१  | १३७   | मोक्षार्थधर्मनिज्ञासा धर्मेष्योगिदेशाः यत्किनः पञ्चमहापात्रकिनः । (गद्यानि.)<br><i>(प्रथमोध्यायः)</i> | १३८   | चत्वारोचणीः, वर्णत्रयं त्रयेषां धर्माः । (गद्यानि.)<br><i>(द्वितीयोध्यायः)</i> | १४२   | चत्वारभाष्माः । (गद्यानि.) सप्तमोध्यायः   | ० |
| १३२   | ब्रह्मभस्यपांडुकुष्टरोगिणः शांतिः हिंसाप्राय । -५७<br>श्चित्तविधिः । (द्वितीयोध्यायः २)             | १-३७  | १४०   | अश्रोत्रियाः अननुवाचनाः अनग्रयः ग्रासणाः । (गद्यानि.)<br><i>(तृतीयोध्यायः)</i>                        | १४०   | प्रकृतिशिष्टानानुवर्ष्य संस्कारविशेषात् ।<br>(गद्यानि.) (चतुर्थोध्यायः)        | १४३   | गृहस्थधर्माः । (गद्यानि.) (अष्टमोध्यायः)  | ० |
| १३३   | प्रकीर्णप्रायश्चित्तानि । (तृतीयोध्यायः)  | १-२२  | १४१   | अस्वर्त्त्रास्त्रीपुरुषप्रधानाऽनग्निरनुदक्ष्याच ।<br>(गद्यानि.) (पंचमोध्यायः ५)                       | १४१   | अथानः स्लानकव्रतानि । (गद्यानि.) इद॒शोऽध्यायः                                  | १४३   | चानप्रस्थधर्माः । (गद्यानि.) (नवमोध्यायः) | ० |
| १३४   | स्तेयप्रायश्चित्तानि । (चतुर्थोध्यायः)  | १-३२  | १४२   | अथानः स्लानकव्रतानि । (गद्यानि.) इद॒शोऽध्यायः   | १४४   | वद्यहृदेवताबलयः । (गद्यानि.) एकादशो  | १४४   | यनिधर्माः । (गद्यानि.) (दशमोध्यायः)       | ० |
| १३५   | अगम्यायमनप्रायश्चित्तानि । (पंचमोध्यायः)  | १-३९  | १४३   | अस्वर्त्त्रास्त्रीपुरुषप्रधानाऽनग्निरनुदक्ष्याच ।<br>(गद्यानि.) (पंचमोध्यायः ५)                       | १४५   | अथानः स्वाध्यायश्चोपाकर्म । (गद्यानि.) द्वयोदशोऽध्यायः                         | १४५   | वद्यहृदेवताबलयः । (गद्यानि.) एकादशो       | ० |
| १३६   | अग्निप्रायश्चित्तानि । (पंचमोध्यायः)<br>समाप्ताचेयं शातानपस्मृत्यनुक्रमणिका । १७                    | १-४१  | १४६   | अस्वर्त्त्रास्त्रीपुरुषप्रधानाऽनग्निरनुदक्ष्याच ।<br>(गद्यानि.) (पंचमोध्यायः ५)                       | १४६   | अथानः स्वाध्यायश्चोपाकर्म । (गद्यानि.) द्वयोदशोऽध्यायः                         | १४६   | वद्यहृदेवताबलयः । (गद्यानि.) एकादशो       | ० |

अथादेशस्मृतीकाप्सक और संस्कृतके नथा भाषाके संबन्धित हैं।  
उपर्युक्त मुद्रित श्लोकों के पासमारवाईज्ञारे श्रीगंगाविष्णु

(9)

| अनु- | पत्र- | विषय-  |
|------|-------|--|
| ७    | १४६   | अथानोभोज्या । भोज्यानि । (गदानि ।)<br>(चतुर्दशोध्यायः) |
|      | १४७   | शोणितशक्तसंभवः पुरुषः । (गदानि ।)<br>(पंचदशोध्यायः)    |
|      | १४८   | अथववहाराः । (गदानि ।)<br>(षोडशोध्यायः)                 |
|      | १४९   | पुत्रप्रशंसा । (गदानि ।)<br>(सप्तादशोध्यायः)           |
|      | १५०   | जानिविवेकः । (गदानि ।)<br>(अष्टादशोध्यायः)             |
| ०    | १५०   | राज्ञाधर्मः पालनीयः । (गदानि ।)<br>(एकोनविंशोध्यायः)   |
| ०    |       |  |

श्लो

१५० पञ्च. विषय. पातकिनांप्रायश्चित्तानि. (गद्यानि.)  
१५१ (पिंशोव्यायः)  
१५२ शूद्रब्राह्मणीसंसामेप्रायश्चित्तं. (गद्या-  
नि) (एकविंशोव्यायः २१) समाप्ताचेयंकासिष्टस्तु तनुकषणिका ११  
इत्यष्टदशं पृतिजामनुकमणि-  
का: समाप्ताः ॥ रक्षे १८०३ दृष्ट-  
नामसंघत्सरे. पौषशु. ६ रवाधिदं  
लेरवनंप्रातर्नववादनावत्सरेपूर्ण  
तामियात् ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

શ્રો

शार्दूलविक्रीडितं-  
 अनुसंप्रदायनिपुणः श्रीकृष्णदास  
 विष्णवभिधानकः समकरोद्धीमोह  
 ॥ श्रीमद्यादवशैलवास्यभिधया-  
 यंत्रेकिनां ॥ लोकानां तु हि ने द्युतिस्मृ-  
 र्दिशिनीं टिप्पणीं ॥ १ ॥  
 स्मृतिपुस्तकमितराण्यप्यनेका-  
 गनिमुन्मय्यां श्रीवेंकटेश्वरारब्द-  
 नथाच अमृतसरारब्दयामे श्रीगं  
 क्षेमराजाभिधालयेऽभंति-

ऋग्.

श्रीगणेशाधनमः ॥१॥ हुताभिहोत्रमासीनमविवेदविदांवरं सर्वशास्त्रविधिजं तस्मैषिभिश्चनमस्तुतं १ नमस्तुत्यचतेर्सर्वाइदंवन  
 मवन् हितार्थसर्वलोकानांभगवन्कथयस्वनः २ अधिरुपाच वेदशास्त्रार्थतत्त्वायन्पृच्छथसंशयं तत्त्वसंप्रवक्ष्यामि  
 थाऽहंयथाश्वतं ३ सर्वतीर्थात्पृथ्यसर्वान्देवान्यगम्यन् जस्वातुसर्वस्तुकानिसर्वशास्त्रातुसारतः ४ सर्वपापहरंदिव्यंसर्वसंशा  
 यनाशनं चतुर्णामपिवर्णानामविःशास्त्रमकल्पयत् ५ येचपापकृतोलोकयेचान्येधर्मदूषकाः सर्वपापैः प्रमुच्यते अत्येदशा  
 स्त्रसुन्तमं ६ तस्मादिदंवेदविद्विरच्येत्यन्यंप्रयत्नः शिष्येभ्यश्चप्रवक्तव्यंसहृते भ्यश्चधर्मितः ७ अकुलीनेत्यसहृतेजडेशूद्देश  
 ठद्विजे एतेष्वनदातव्यमिदशास्त्रंद्विजोन्मेः ८ एकमव्याप्तंप्रकृतगुरुः शिष्येनिवेदयेत् पृथिव्यांनास्तितद्व्ययदत्यात्यनृणाम  
 वेत् ९ एकाक्षरप्रदातारथोगुरुंनाभिमन्यते शुनांयोनिशत् गत्वा गांडालभिप्रजापते १० वेदंगृहीत्यायः कथितशास्त्रंचैवापमन्य  
 ते ससद्यः पश्नतांयातिसंभवानेकविंशतिं ११ स्वानिकर्मणाः प्राणाद्वरसंतोषिमानवाः प्रियाभवंतिसोकस्यस्मेस्वेकर्मण्युपस्थि  
 ताः १२ कर्मविप्रस्ययजनंदानमध्ययनंतपः प्रतिग्रहोध्यापनं चयाजनंचतिवृत्तयः १३ क्षमियस्यापियजनंदानमध्ययनंतपः श  
 श्रोपजीवनंभूतरक्षणंचेतिवृत्तयः १४ दानमध्ययनंवार्तायजनंचतिवैविशः शुद्धस्यवार्ताशुशृष्टाद्विजानांकारुकर्मच १५ तदेत  
 कर्माभिहितंस्यितायभवर्णिनः बहुमानमिहप्राप्यप्रयांतिपरमांगतिं १६ येष्वपेत्ताः स्वधर्मात्तेपरधर्मेष्ववस्थिताः तेषां

Rangnath Raghunath Dhavalikar Karad

(१०)

अधि  
१

शास्तिकरोराजास्वर्गलोकेमहीयते १७ आत्मीये संस्थितो धर्मशूद्रोपिस्वर्गमश्चुते परथर्मोभवेत्याज्यः स्फुर्हपपरदारवत् १८ वध्योरा  
ज्ञासवैशूद्रोजपहोमपरश्चयः ततोराष्ट्रस्य हन्तासौयथावन्हेश्वैजलं १९ प्रतिग्रहो द्यापनं च नथाऽविकेयविक्यः याज्यं च तु र्भिरप्ये  
तैः क्षत्रविद्वपतनस्मृतं २० सद्यः पतनियां सेनलाक्षयालघारन च ग्रहे एशूद्रो मवतिब्राम्हणः क्षीरविक्यी २१ अग्रताश्चानधीय  
नायवभैश्वच्चराद्विजाः तं ग्रामदंडयेद्राजा चौरमुक्तभद्रदन त् २२ विद्वाऽज्यमविहांसौयेषु राष्ट्रेषु भुजते तेष्यनावृष्टिमिच्छुतिमह  
द्वाजायतेभयं २३ ब्राम्हणान्वेदविदुषः सर्वशास्त्रविशारदात् २४ नप्तिपूर्जन्योयतान्मूर्जयेन्मूर्पः २५ चयोलोकास्त्रयोवेदाआ  
श्रमाद्वभयोग्यः एतेषां रक्षणाध्यायसस्वधाश्चाम्हणः पुरा २६ उपेसध्येसमाधा यमानकुर्वतितेद्विजाः दिव्यवर्षसहस्राणि  
स्वर्गलोकेमहीयते २७ चारवंकुरुतेराजागुणदोषपरीक्षणः २८ स्वं गच्छ पत्तं च पुनः कोशं सञ्चर्यजयेत् २९ दुष्टस्यदंडः स्वजनस्य  
पूजान्यायेन कोशस्य च संप्रवृद्धिः अपक्षपातोर्थिषु राष्ट्ररक्षा पञ्चवयज्ञाः कथिता नृपाणां ३० यत्वजापालनपुण्यमासु च नीहपा  
र्थिवाः न तु कतु सहस्रेण प्राप्तु वंतिद्विजोत्तमाः ३१ अलाभेदवरवातान् रहदेषु सरसीषु च उद्दत्यचतुरः पिंडानृपारके रूपानमाचरत्  
३० वसाशुक्मसूडमज्जामृतं विद्विकर्णविष्णवः श्लेष्मास्थिद्विषिकास्वदाद्वादशेतनृणामलाः ३१ वण्णां वण्णां कर्मणौ वशद्विरु  
क्तामनीषिभिः सृद्वारिभिर्विष्णवं विष्णवासु तरेषां तु वारिणा ३२ शौचं भैमं गलमायास अनसूयास्वहादमः लक्षणानि च विग्रस्य तथादानं

स्मृ०  
१

१

(10A)

दृपापिच ३३ नगुणान् गुणिनो हन्ति स्तोति चान्यान् गुणान् पि नह सेवा न्यदोषां श्वसान सूक्ष्मापकीर्तिता ३४ अभक्षपरिहारश्वासंस  
 गश्वाप्यनिंदितः आचार रेषु व्यवस्थान शोचमित्यभिधीयते ३५ ॥ प्रशस्ता चरणं नित्यम प्रशस्तविवर्जनं एतद्विमंगलं प्रोक्तं भूषिभि  
 र्धर्मवादिभिः ३६ शरीरं पीडयते येन शब्देन त्यश्वभेन वा अत्यंतं तन्मुकुर्वति अनायासः स उच्यते ३७ यथोत्सन्नेन कर्तव्यः संतोषः  
 सर्ववृत्तुषु न स्पृहत्परदारेषु सास्पृहात्प्रकीर्तिता ३८ वात्यभाध्यात्मिकं वापिदुःखसुखाद्यते परैः नकुप्यति न चाहन्ति दमदत्यभि  
 धीयते ३९ अहन्यहनिदातव्यम दीनेनातरात्मना लोकादपि यत्क्षेत्रदानमित्यभिधीयते ४० परेस्मिन्बन्धु वर्गेभ्यामित्रेष्वरिष्ठो  
 तथा आत्मवद्वर्तितव्यं हित्येषापरिकीर्तिता ४१ यस्तत्र स्मारणं तोगृहस्योपिभवेहिजः सगच्छतिपरस्थानजायते न नह वेष्टुनः ४२  
 इष्टापूर्तचक्रतव्यं श्रान्त्येन वयत्वतः इष्टेन लभते स्वां प्रतेषां वापालनं धीयते ४३ अभिहात्रं तपः सत्यं वेदानां चैव पालनं आनित्यं वै  
 श्वदेव श्वेष्टमित्यभिधीयते ४४ वापीकूपतदागादिर्दर्शन ॥ ४५ ॥ निच अन्तपदानुमारामः पूर्तमित्यभिधीयते ४५ इष्टापूर्तेहि  
 जातीनां सामान्ये धर्मसाधने अधिकारीभवेच्छदः पूर्तधर्मेन वेदिक ४६ यमान्सेवेत सुततं ननित्यं नियमान्वयः यमान्यतत्स्कु  
 र्वाणोनियमान्केवत्तानुभजन् ४७ आनृशं संक्षमासेत्यमहिंसादानमार्जवं प्रीतिः प्रसादोमाद्युर्घ्यमार्दिवं च यमादशा ४८ शोचमि  
 ज्यातपोदानं स्वाध्यायोपस्थनियग्रहः ब्रतमोनोपवासं च स्नानं च नियमादशा ४९ प्रतिनिधिं कुशमयं तीर्थवारिषु मञ्जति यमुदि

(11)

अधि.  
२

श्यनिमज्जेत अष्टभागं लभेत सः ५० मातरं पितरं वा पिभातरं स्कृदं गुरुं यसु द्विरयनि मज्जेत द्वादशां शफलं भवेत् ५१ अपुत्रे  
 पैव कर्तव्यः पुत्रप्रतिनिधिस्तदा पिंडोदकक्रियाहेतोर्यस्मात्समात्स्यलतः ५२ पिता पुत्रस्य जातस्य पश्येच्चेज्जीवतो सुरवं ऋणम्  
 स्मिन् संनयति असृतत्वं च गच्छति ५३ जातमात्रणपुत्रणपितृणामगृणीपिता तदन्हिंशु द्विमाप्रतिनिरका आयतहिसः ५४  
 जायते वहवः पुत्राय द्येकोपिगयां वज्जेत् यजते चाशुभूमधं च नीरुषादृभुत्सज्जेत् ५५ कांसंतिपितरः संवेनरकांतरभीरवः गयां या  
 स्यतियः पुत्रस्मन रुद्धाताभविष्यति ५६ फल्गुतीर्थेनर वादेशु गदाधरं गदाशीर्षं पदाकम्यसुच्यतेश्च महत्यथा ५७ म  
 हानदीपुपस्पृश्यतर्पयति विदेवताः अक्षयान्तर्लभतलोकाग्निः ५८ विसमुद्धरत् ५९ शकास्थानसमुत्पन्नमक्षभोज्यविवर्जिते आ  
 हारशु द्विंशद्यामितन्मेनिगदतः शृणु ५१ अक्षारं लघुणिः तापुद्वाम्हासु वर्चलं विरागं शंखपुष्पो वाग्राह्यणः पयसासह ६० म  
 द्यभांडिद्विजः कश्चिद् ज्ञानात्सिवतेजलं प्रायश्चित्तकथतस्य सुच्यतेनकमणा ६१ पालाशविल्वपत्राणि कुशान्यद्यान्युदुष्ट  
 रं क्वाथयित्वा पिवेदापस्विराग्नेवशः ६२ सायं प्रातरत्युयः सध्याप्रमादाद्विक्रमेत्सकृत् गायत्र्यारत्सहस्रं हिजपेत्रस्नात्वासमा  
 हितः ६३ रोगाक्तं तोथवाऽर्घ्यातः स्थितः रुमानजपाद्वृहिः ब्रह्मकृचरेङ्गत्यादानं दत्त्वाविश्वाद्वृहिति ६४ गवांशुर्गोदके रुमात्वामहा  
 नद्यपसंगमे समुद्रदर्शनेवापिव्यालदृष्टिः शचिर्भवेत् ६५ वृक्षरथानशृगालै रुद्धाददृष्टरुद्धामहणः हिरण्योदकसंमिश्रं दृत्वा

स्मृ-  
१

२



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)